Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

ऑपरेशन बस्तर : युद्ध और प्रेम-कथा

अंकित भोई
शोधार्थी, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, दुर्ग

शोध-सार

इस लघु उपन्यास में देश की नक्सल राजधानी बस्तर के दुर्गम एवं नक्सल समस्या से प्रभावित क्षेत्र में तैनात पुलिस कर्मियों को होने वाले कष्ट, दुविधाओं, अंतर्द्वंद्व और विपरीत परिस्थितियों में उनकी कर्त्तव्यपरायणता का वर्णन किया गया है। बेहद सरल भाषा में लिखित यह उपन्यास पाठकों के मानस पटल पर बस्तर की सांस्कृतिक महक बिखेरता है। लेखक ने बस्तर के निवासियों की नैसर्गिक सरलता, विश्वविख्यात मुर्गा-लड़ाई, नशीली सल्फी, मानव-तस्करी, शिक्षा व्यवस्था को सबल बनाने हेतु किए जा रहे सरकारी प्रयास, बजरंग दल एवं रामकृष्ण मिशन की सतत सक्रियता, धर्म-परिवर्तन और माओवादी संगठन द्वारा की जाने वाली अवैध उगाही जैसे विभिन्न यथार्थ आधारित तथ्यों को परस्पर संबद्ध कर संजीदगी से बस्तर का सजीव चित्रांकन किया है। प्रेम और जंग की समानांतर कथा पर आधारित यह उपन्यास वर्ष 2020 में यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसके लेखक भारतीय-तिब्बत सीमा पुलिसबल के पूर्व उपसेनानी श्री कमलेश कमल हैं। लेखक ने कल्पना और यथार्थ मिश्रित इस कृति को देश के युवाजनों को समर्पित किया है। प्रस्तुत रचना के माध्यम से उन्होंने सुरक्षा बल एवं नक्सली, दोनों का ही पक्ष जानने का आह्वान किया है।

मुख्य शब्द: संघर्ष, कर्तव्य, प्रेम, बस्तर, विश्वासघात, आत्मसमर्पण

मूल आलेख

प्रस्तुत उपन्यास की पात्र योजना संक्षिप्त किन्तु सशक्त है। इसका कथानायक सौवीर सिंह है जो बस्तर में पुलिस अफसर के पद पर पदस्थ है और कथानायिका इला है जो गाँव में ही शिक्षिका है। इला का भाई इलियट है जो बजरंग दल का नेता है, वह पुलिस के लिए मुखबिरी भी करता है। इला की दो सहेलियाँ हैं - हेमा और सुरेखा। हेमा भिलाई में पढ़ती है जबकि सुरेखा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में पढ़ाई पूरी करने के बाद गाँव के जमींदार के शोषण का शिकार हो जाती है। वह परिस्थितियों से बाध्य होकर नक्सल संगठन से जुड़ जाती है और नक्सली कमांडर विशू से विवाह कर लेती है। हेमा का पति 'दा' इंजीनियर है और भिलाई शहर में रहकर नक्सलियों का अप्रत्यक्ष सहयोग करता है। इंदर, बबीता और हीरा पुलिस के अन्य सहयोगी पात्र हैं।

उपन्यास की शुरुआत मुठभेड़ में हताहत नक्सलियों की गणना से होती है। मुठभेड़ में पुलिस का जवान सिराज भी शहीद हो जाता है। उचित समय पर उपचार न होने के कारण सिराज की शहादत होती है। लेखक ने बेहद मार्मिक शैली में उसके परिजनों की पीड़ा का चित्रण किया है। सिराज के माध्यम से लेखक ने शहादत के बाद किसी सैनिक के परिवार के संघर्ष का चित्र उकेरा है। लेखक ने बस्तर में स्थित जंगल की बीहड़ता और खतरनाक दुर्गम परिस्थितियों का सजीव चित्रण किया है। "संविधान की पांचवी अनुसूची के

अनुसार बस्तर एक अनुसूचित क्षेत्र है। यहां की जमीन पर केंद्र या राज्य का एक इंच भी अधिकार नहीं है।"[1] इस उपन्यास में देश में बस्तर की संवैधानिक स्थिति को भी स्पष्ट किया गया है।

उपन्यास की भाषा अत्यंत सरस और चुटीली है। बस्तर के सांस्कृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है- "बस्तर में सल्फी ली नहीं जाती, पी जाती है। दरअसल, यह बस्तर का सर्वप्रमुख पेय है, जैसे केरल, तमिलनाडु में नारियल पानी या पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गन्ने का जूस।"[2] लेखक ने सल्फी को बस्तर में व्याप्त गरीबी और दुख का इलाज कहा है। बस्तर में ग्रामीणों के साथ-साथ पुलिस और नक्सली भी सल्फी का नियमित सेवन करते हैं।

हीरा और बबीता के रूप में एक दम्पत्ति का वर्णन किया गया है। कभी दोनों ही नक्सलवादी थे और परस्पर प्रेम करते थे। बबीता पर नक्सली संगठन के कमांडर की बुरी नजर थी। समय के साथ उसकी नीयत बुरी होती गई और एक दिन मौका देखकर उसने बबीता के साथ यौन दुर्व्यवहार किया। अंततः उससे परेशान होकर हीरा और बबीता दोनों ने ही पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। अब वो नक्सलियों के खिलाफ लड़ाई में पुलिस के हथियार बन गए। उनके आत्मसमर्पण के पश्चात बदले की भावना से नक्सली हीरा की बूढ़ी माँ को प्रताड़ित करने लगे। इस उपन्यास में किसी आत्मसमर्पित नक्सली के परिजनों होने वाली पीड़ा को मार्मिक रूप से व्यक्त किया गया है।

बस्तर में बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन का एक बड़ा मुद्दा है। इस उपन्यास में कुछ पादरियों की गिरफ्तारी की घटना का वर्णन है जो स्थानीय आदिवासियों को डरा-धमका कर धर्म-परिवर्तन हेतु बाध्य कर रहे थे। बजरंग दल का कार्यकर्त्ता इलियट कहता है - "वैसे तो गोंडी, हल्बी, भरती, धुरवा, माड़ (अबूझमाड़) सभी मूलतः हिंदू धर्म को मानने वाले हैं, लेकिन विगत कुछ सालों में धर्म-परिवर्तन की घटनाएं बढ़ी हैं। माड़ इलाके में तो यह और भी ज्यादा है। मोहताज लोगों को इलाज आदि सुविधाएं देकर धर्म बदलवाने का एक रिवाज सा बन गया है।"[3] लेखक ने शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं से कोसों दूर जीवनयापन कर रहे गरीब आदिवासियों के जबरन धर्म-परिवर्तन की घटना पर चिंता व्यक्त करते हुए इसके प्रतिरोध में रामकृष्ण मिशन के सक्रियता की प्रशंसा की है। लेखक ने समाज की मुख्यधारा से बहुत दूर बस्तर क्षेत्र में धर्म-परिवर्तन की आड़ में ईसाई मिशनरियों की नक्सल गतिविधियों में संलिप्तता को भी उजागर किया है।

बस्तर क्षेत्र में स्थानीय आदिवासियों के दिल में पुलिस के प्रति विश्वास पैदा करने के लिए समय-समय पर प्रशासन द्वारा 'सिविक एक्शन प्रोग्राम' का आयोजन होते रहता है। चूंकि उपन्यास के लेखक स्वयं एक उपसेनानी थे इसलिए उपन्यास में यथास्थान उनका पूर्वाग्रह दृष्टिगोचर होता है। लेखक ने स्थानीय विद्यालय में स्वतंत्रता पर्व के आयोजन अवसर पर प्राचार्य की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का वर्णन किया है।

बस्तर में मानव-तस्करी एक बेहद गंभीर समस्या है। इस उपन्यास में रोजगार के नाम पर धोखे से तमिलनाडु भेजे गए किशोरवय लड़कियों के यौन शोषण की घटना को बेपर्दा किया गया है। राष्ट्रीय मीडिया में प्रसारित होने के बाद स्थानीय प्रशासनिक महकमा सजग हो जाता है। दरअसल स्थानीय पंचायत के मुखिया का बेटा देह व्यापार का प्रमुख सरगना है जो पैसों का लेन-देन कर बाहरी राज्यों में बस्तर की कुंवारी लड़कियों की

सप्लाई करता है। इस प्रसंग में लेखक ने बस्तर में सक्रिय मानवाधिकार संगठन के सक्रियता की प्रशंसा की है और दलाल के चंगुल से पीड़ित लड़कियों की मुक्ति का चित्रण किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक सौवीर सिंह स्वयं लेखक ही है। उसे विद्यालय की शिक्षिका इला से प्यार हो जाता है। "कहते हैं कि बस्तर में रहकर अगर वर्दी वाला आशिकी कर ले तो वह जान गँवाता है; परंतु यह भी तो कहते हैं ना कि इश्क पर किसका जोर चला है... एक बार किसी को इश्क़ हो जाए, तो सब की सब बातें धरी-की-धरी रह जाती हैं।"[4] दोनों में मेल-मिलाप बढ़ते जाता है और समय के साथ प्रेम प्रगाढ़ होने लगता है। उसे इला के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण जानकारी मिलने लगती है। इला बताती है कि ग्राम पटेल ने किस तरह कर्ज वसूली की आड़ में सुरेखा के साथ यौन दुराचार का प्रयास किया और विरोधस्वरूप सुरेखा ने आत्मरक्षा की कोशिश में पटेल पर हमला किया। लेखक कमलेश कमल ने बेहद संजीदगी से नक्सलियों की जनताना अदालत में ग्राम पटेल को फांसी देने की घटना का चित्रण किया है। निर्धनतावश पढ़ाई से वंचित हुई सुरेखा को पटेल की हत्या के झूठे आरोप में नामजद अभियुक्त बना दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में मजबूर होकर वह नक्सल संगठन में शामिल हो जाती है और संगठन के प्रमुख लीडर विशू की न्यायप्रियता से आकर्षित होकर उससे प्रेम करने लगती है।

इस उपन्यास में शहरी माओवाद के चक्रव्यूह का भी पर्दाफाश किया गया है। हेमा, नक्सली विशू की बहन और इला की सहेली है जो अपने पति 'दा' के साथ भिलाई शहर में निवास करती है। 'दा' पेशे से इंजीनियर है। एक दिन खबर आती है कि उनके घर से भारी मात्रा में 'लाल-साहित्य' बरामद हुआ है। इस घटना के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। पुलिस प्रशासन को विश्वसनीय सूत्रों से उसके नक्सली संलिप्तता की खबर मिली थी। उसकी पत्नी हेमा मीडिया के समक्ष अपने पति को निर्दोष बताते हुए पुलिस पर भाई का बदला पति से लेने का आरोप लगाती है। सहेली हेमा को परेशान देखकर इला विचलित हो जाती है। 'दा' का गिरफ्तार होना उसके लिए भी अप्रत्याशित घटना है। लेखक ने सफेदपोश शहरी माओवादियों द्वारा मार्क्सवाद और वर्गविहीन समाज जैसे विषय पर रोचक चिंतन प्रस्तुत किया है। "चैनलों पर बैठकर नक्सलवाद को माओवाद का भारतीय संस्करण कहने वालों को भी शायद पता नहीं होगा कि स्वयं माओ ने नक्सलियों के सबसे बड़े नेता चारु मजूमदार के बारे में कहा था कि रोमांटिक मूर्ख क्रांति नहीं ला सकते। पर, नहीं! ये नक्सली तो रोमांटिक मूर्ख भी नहीं हैं, भ्रमित अवसरवादी हैं।"[5]

बस्तर में मनोरंजन के साधन बहुत सीमित हैं। सल्फी और मुर्गा लड़ाई से ही बस्तरवासी अपना मनोरंजन करते हैं। इस उपन्यास में लेखक ने मुर्गा लड़ाई के विभिन्न दांव-पेंच और इस खेल में होने वाली हार-जीत में लगने वाले सट्टे का मनोरंजक चित्रण किया है। नक्सल संलिप्तता के आरोप में गिरफ्तार हुए 'दा' को एक महीने के अंदर ही जमानत मिल गई। पेशे से इंजीनियर दा ने छलपूर्वक कूटरचना कर एक पंचायतभवन का नक्शा पास करवा कर लिया और उसका पैसा आहरण कर लिया था। उक्त निर्माणाधीन पंचायत-भवन को नक्सलियों ने बम विस्फोट कर उड़ा दिया। बाद में पुलिस को उनके विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ कि कागज पर भवन पूरी तरह से बन चुका था और पूरी राशि भी हड़प ली गई थी। उक्त गबन में हेमा और 'दा' के साथ-साथ तहसीलदार और एक सिविल इंजीनियर की संलिप्तता भी उजागर हुई। इला और इलियट को अब

भी हेमा और 'दा' निर्दोष लगते थे। यह बात सौवीर सिंह को बहुत कचोटती थी। प्रस्तुत उपन्यास में माओवाद में व्याप्त भ्रष्ट आचरण का प्रभावी वर्णन किया गया है। लेखक ने कथानायक सौवीर सिंह के चरित्र के माध्यम से पुलिसवाले और प्रेमी के अंतर्द्वंद्व का प्रभावी मूल्यांकन किया है।

लेखक ने इस उपन्यास में बस्तर क्षेत्र में व्याप्त मलेरिया की भयावहता और जर्जर स्वास्थ्य सुविधाओं पर करारी चोट की है। समाज की मुख्यधारा से कोसों दूर बस्तर में आधुनिकता का रंच मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा है। जब सौवीर सिंह के बड़े भाई मलेरिया से मृत्यु की घटना पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं तो सौवीर सिंह का प्रत्युत्तर बड़ा दिलचस्प है। "आप रहते होंगे इक्कीसवीं सदी में, हम तो बस्तर में रहते हैं। यह आज भी वही है, जो शायद पांच हजार साल पहले था। परिवर्तन हुआ भी है, तो बहुत थोड़ा।"[6] उक्त कथन से स्पष्ट है कि स्थानीय बस्तरवासियों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। बस्तर के बीहड़ क्षेत्र में स्वास्थ्यगत एवं आवागमन सुविधाओं के साथ-साथ रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी सुविधाओं की स्थिति भी बदहाल है।

बस्तर में विपन्नता और बदहाली का विशाल साम्राज्य है। स्थानीय सुरक्षाबल द्वारा जब सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत किताबें, कपड़े, मच्छरदानी और दवाइयों का वितरण किया जाता है तो उन्हें पाने के लिए लोगों का बड़ा हुजूम उमड़ पड़ता है। बस्तर में इतनी निर्धनता है कि उन्हें जितना भी दिया जाए वह कम ही सिद्ध होता है। बस्तर के निवासियों का यह दारिद्र्य-दृश्य देखकर कथानायक का हृदय पसीज जाता है। इस उपन्यास में लेखक ने बस्तर की बदहाली का मार्मिक चित्रण किया है।

लेखक कमलेश कमल ने माओवादी को 'कमाओवादी' कहा है जो तथाकथित नेताजी के साथ मिलकर उनकी शह में आंगनबाड़ी के राशन, बर्तन और पंचायत-भवन जैसी सरकारी जगहों का उपयोग नक्सल संगठन के काम के लिए करते हैं। इस उपन्यास में लेखक ने नक्सलवाद के दोहरे चरित्र पर करारा प्रहार किया है जो एक तरफ बस्तर के आदिवासियों के हितों की रक्षा हेतु लोकतंत्र का विरोध करता है तो दूसरी तरफ उसी लोकतंत्र के तथाकथित प्रतिनिधियों की आड़ में अवैध उगाही कर सरकारी फंड का दुरुपयोग करता है। आदिवासी सब बर्दाश्त कर सकता है पर आस्था पर चोट कदापि नहीं। पुलिसबल के कुछ सदस्य एक मठ को नक्सली नेता का स्मारक समझकर भूलवश उसे तोड़ देते हैं। तभी वहां का स्थानीय पंडित आकर अपना विरोध व्यक्त करता है। भले ही भूल से स्मारक को तोड़ा गया पर उस घटना के बाद स्थानीय आदिवासी समुदाय में पुलिसबल के प्रति क्षोभ का संचार हो जाता है।

सौवीर सिंह और इला का प्रेम शारीरिक संयोग तक पहुँच जाता है, परिणामस्वरूप इला गर्भवती हो जाती है। दोनों स्थानीय मंदिर में ही शादी कर लेते हैं। नक्सल लीडर विशू को जैसे ही इला के पुलिसवाले से विवाह का पता चलता है तो वह उसके पति और भाई, दोनों को ही मारने के लिए प्रतिबद्ध हो जाता है। दूसरी तरफ इला के सहयोग से सौवीर के नेतृत्व में पुलिसबल एक मुठभेड़ में विशू को मार गिराते हैं। विशु की मृत्यु से सुरेखा का सुहाग उजड़ जाता है। लेखक ने बेहद संजीदगी से उक्त घटनाक्रम और उसके बाद इला की आत्मग्लानि की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। यह उपन्यास सुखान्तक है। विधवा सुरेखा और इला के भाई

इलियट की शादी हो जाती है। उपन्यास के अंत में सुरेखा को पुलिस की नौकरी मिल जाती है और इला पति के साथ पुणे जाकर वहाँ पी-एच.डी. की पढ़ाई करने लगती है।

मनोरमा इयर बुक ने वर्ष 2021 में 'ऑपरेशन बस्तर : प्रेम और जंग' को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ साहित्य कहा है। आकाशवाणी, दिल्ली की समाचार वाचिका डॉ. प्रियंका अरोड़ा ने इसकी समीक्षा करते हुए लिखा है, "पूरे कथानक में पुलिस और नक्सलियों के संघर्ष को प्रेम और जंग के दो धड़ों के बीच संतुलन बनाते हुए लेखक अंत तक पहुंच जाता है। यह संतुलन इतना रोचक है कि कहीं कुछ थोपा हुआ या असत्य प्रतीत नहीं होता।"[7]

यादवेन्दर आर्य ने इस उपन्यास के संदर्भ में लिखा है, "श्री कमलेश जी ने इस उपन्यास में अपने नक्सल प्रभावित क्षेत्र के प्रवास के अनुभव तथा सुधार के प्रयासों को कल्पित करके यथार्थवादी और निष्पक्ष लेखन किया है। मूलभूत जरूरतों से जूझते बेबस परिवारों को किस तरह हथियार थमाकर मौत के रास्ते पर भेज दिया जाता है। एक दबंग आदिवासी किसी दूसरे कमजोर आदिवासी का शोषण कैसे करता है। संजय दत्त जंगल में किस तरह अपने अभियान को अंजाम देता है और किस तरह की समस्याओं का सामना करता है। पारस्परिक स्वतंत्रता होने के बावजूद जंगल में आत्मीयता भी है।"[8]

प्रसिद्ध समीक्षक चण्डीदत्त शुक्ल ने इसे 'युद्धभूमि में अनुराग' शीर्षक से अभिव्यंजित किया है। इसकी भाषा-शैली पर टिप्पणी करते हुए वे लिखते हैं, "कमल की भाषा में प्रवाह है। वे दुरूह हिंदी के जाल में नहीं उलझते, बल्कि उस जुबान में बात करते हैं जो पाठकों की समझ में आए।"[9]

प्रस्तुत उपन्यास के संदर्भ में डॉ. उषा किरण ने लिखा है, "ऑपरेशन बस्तर एक उपन्यास है जिसका संपूर्ण कथानक नक्सलियों के खिलाफ एक ऑपरेशन को अंजाम देने के इर्द-गिर्द बुना गया है जो जंगल, जमीन, संघर्ष और प्रेम आदि को अत्यंत सरल और सहज शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान करता है। कहानी अत्यंत रोचक साफ-सुथरी एवं पाठकों को सहज ही अपनी और आकर्षित करने वाली है। आरंभ से अंत तक यह स्वयं में पाठकों को बांध कर रखने में सक्षम है। कमलेश जी की लेखनी समस्त पात्रों के साथ बखूबी न्याय प्रदान करने में सफल रही है।"[10]

यह उपन्यास पाठक वर्ग को 21वीं सदी के बस्तर से रूबरू करवाता है। इसमें प्रेम, निराशा, कुंठा, साहस, ग्लानि जैसे विभिन्न मनोभावों की सरस अभिव्यक्ति हुई है। यदि लेखक कमलेश कमल को आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में रखा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ सूची

1. कमल, कमलेश. ऑपरेशन बस्तर: प्रेम और जंग. दिल्ली : यश पब्लिकेशंस, प्रथम संस्करण, 2020, पृष्ठ संख्या 9
2. वही, पृष्ठ संख्या 27
3. वही, पृष्ठ संख्या 35

4. वही, पृष्ठ संख्या 47
5. वही, पृष्ठ संख्या 58
6. वही, पृष्ठ संख्या 69
7. अरोड़ा, डॉ. प्रियंका. मनोरमा इयर बुक. 2021, पृष्ठ संख्या 77
8. आर्य, यादवेन्द्र. वर्तमान अंकुर. 13.02.2020
9. शुक्ल, चण्डीदत्त. किताब गली. अहा ज़िन्दगी. दैनिक भास्कर. 14.06.2020
10. किरण, डॉ. उषा. दि ग्राम टुडे. देहरादून. 21.03.2020